जुलाई 2018

"ईश्वर ने संसार को इतना प्यार किया कि उसने इसके लिए अपने एकलौते पुत्र को अर्पित कर दिया..."

(योहन 3:16)

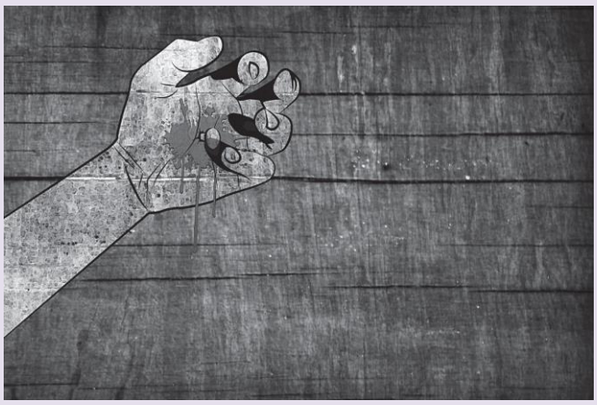

<u>विचार</u>

इस जुलाई महीने के JY कुटुंब (हॉउसहोल्ड) से हम सुसमाचार के प्रचार के अपने स्तम्ब पर आधारित विचारों की एक श्रंखला शुरू कर रहे हैं | इस महीने हम धर्म प्रचार के लंबवत आयाम पर अपना ध्यान केन्द्रित करेंगे - ईश्वर और प्रचार के बीच के घनिष्ट सम्बन्ध पर |

पवित्र त्रित्व ही धर्म प्रचार का स्रोत और उत्तम उदाहरण है - चाहे वो त्रित्व के बीच जीवन हो या उनका मिशन | कलीसिया की धर्म शिक्षा हमें सिखाती है कि त्रित्व के तीन जनों के बीच का प्रेम और समागम (त्रित्व के बीच का जीवन) उमड़ आने की वजह से ही सृष्टि की रचना, मुक्तिविधन और मानव जाती का पवित्रिकर्ण (त्रित्व का मिशन) हुआ था | अर्थात, त्रित्व के बीच के जीवन ने स्वयं को सृष्टि की रचना के रूप में, मानव जाती के मुक्ति के इतिहास में, और पुत्र और पवित्र आत्मा के कार्यों के रूप में उजागर किया, जो आज भी कलीसिया के कार्यों में जारी रहता है | (CCC 257, 235)

एकलौते पुत्र का इस धरती पर आना, जिसे हम ईश्वर अवतार कहते हैं, हमें स्वर्ग राज्य के प्रचार का एक सुन्दर उदाहरण देता है | संत पौलुस संक्षेप में हमें इस रहस्य को समझाते हुए कहते हैं, "आप लोग अपने मनोभावों को ईसा मसीह के मनोभावों के अनुसार बना लें | वह वास्तव में ईश्वर थे और उनको पूरा अधिकार था कि वह ईश्वर की बराबरी करें, फिर भी उन्होंने दास का रूप धारण कर तथा मनुष्य के समान बन कर अपने को दीन-हीन बना लिया और मनुष्य रूप धारण किया..." (फिलिप्पियों 2:5-8)| ख्रीस्त का दिव्य त्याग और पूर्ण समर्पण ही ईश्वर का दुनिया तक पहुँचने का साधन था | पिता और पवित्र आत्मा के साथ बराबरी भी उन्हें, पाप को छोड़, हर रूप में मनुष्य बनने से नहीं रोक पाई | मानव जाती को ईश्वर के पास लाने का इससे बेहतर कोई और तरीका नहीं था कि वे उनमे से एक बन जाएँ | अपने जीवन के दिव्य त्याग की राह पर चलते हुए येसु ने जो भी चुनाव किये वो सब अपने पिता की इच्छा पूरी करने के लिए किए ; चाहे वो गौशाले में जन्म लेना हो, या सन्यासी की तरह जीवन व्यतीत करना हो, या गरीब और दीन-हीनों के बीच रहना हो, या दुःख झेलते हुए क्रूर मृत्यु प्राप्त करना हो, या पुनरुत्थान के साथ हमारे लिए नवजीवन हासिल करना हो | "क्योंकि यही तो मुझे करने भेजा गया है" (लूकस 4:38)|

ऊपरी कमरे में एकत्रित, डरे और सहमे प्रेरितों को, उसी पवित्र आत्मा ने परिवर्तित कर दिया जो पिता और पुत्र से उत्पन होता है | पेंतेकोस्त की घटना ने उनके मिशन को स्पष्ट और निश्चित कर दिया | प्रेरित चरित हमें बताता है कि किस प्रकार पवित्र आत्मा अलग-अलग रूप से नवजात कलीसिया में उपस्थित रहा | वही पवित्र आत्मा सदियों से आज तक कलीसिया के साथ रहकर अपना कार्य पूरा कर रहा है | "पेंतेकोस्त के दिन धर्म की घोषणा का महान उद्घाटन पवित्र आत्मा से होना एक संयोग नहीं था | अपितु यह कहना चाहिए कि पवित्र आत्मा ही धर्म प्रचार का मुख्य कर्ता है : वही है जो हमें सुसमाचार की घोषणा करने को प्रेरित करता है और वही है जो संसार के अंतःकरण की गहराई में मुक्तिविधान को स्वीकार करने और समझने में सहायता करता है" (एवंजलाई नुन्टियनडाई #75) |

'पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा के नाम' के बप्तिस्मा में हमें पवित्र त्रित्व के अंदरूनी जीवन और कार्यों में भागीदार बनने का आमंत्रण मिलता है | क्या मैं अपने सामजिक जीवन में पवित्र त्रित्व के प्रेम और सहभागिता का अनुभव करता हूँ ? ईश्वर का मनुष्य बन्ने और पवित्र आत्मा के काम करने के रहस्यों ने मेरे जीवन पर कितना प्रभाव डाला है ?

संतों के मुख से

संसार की सृष्टि करने में ईश्वर को कोई कीमत नहीं चुकानी पड़ी, परन्तु उसे पाप से उबारने के लिए उसे अपने लहु से कीमत चुकानी पड़ी | धन्य फुल्टन शीन

करने हेतु

अपनी मुक्ति के अनुभव में अधिक गहराई में उतरने के लिए अपने जीवन में ईश्वर के प्रेम के कार्यों को अनुभव करें |